IJAREEIE

e-ISSN: 2278-8875
p-ISSN: 2320-3765

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

Volume 12, Issue 10, October 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.317

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

पाणिनि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

[1]बरखा तोमर, [2]डॉ. शशि तिवारी

[1]शोधकत्री, आगरा कॉलेज, आगरा, उत्तर प्रदेश

[2]रीडर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा (उत्तर प्रदेश)

सार

पाणिनि (७०० ई॰पू॰) संस्कृत भाषा के सबसे बड़े वैयाकरण हुए हैं। इनका जन्म तत्कालीन उत्तर पश्चिम भारत के गान्धार में हुआ था। इनके व्याकरण का नाम अष्टाध्यायी है जिसमें आठ अध्याय और लगभग चार सहस्र सूत्र हैं।[9] संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है। अष्टाध्यायी मात्र व्याकरण ग्रन्थ नहीं है। इसमें प्रकारान्तर से तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्र मिलता है। उस समय के भूगोल, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा और राजनीतिक जीवन, दार्शनिक चिन्तन, खान-पान, रहन-सहन आदि के प्रसंग स्थान-स्थान पर अंकित हैं।

परिचय

पाणिनि का जन्म शलातुर नामक ग्राम में हुआ था। जहाँ काबुल नदी सिंधु में मिली है उस संगम से कुछ मील दूर यह गाँव था। उसे अब लहुर कहते हैं। अपने जन्मस्थान के अनुसार पाणिनि शालातुरीय भी कहे गए हैं। और अष्टाध्यायी में स्वयं उन्होंने इस नाम का उल्लेख किया है। चीनी यात्री युवान्च्वां (७वीं शती) उत्तर-पश्चिम से आते समय शालातुर गाँव में गए थे। पाणिनि के गुरु का नाम उपवर्ष पिता का नाम पणिन और माता का नाम दाक्षी था। पाणिनि जब बड़े हुए तो उन्होंने व्याकरणशास्त्र का गहरा अध्ययन किया। पाणिनि से पहले शब्दविद्या के अनेक आचार्य हो चुके थे। उनके ग्रंथों को पढ़कर और उनके परस्पर भेदों को देखकर पाणिनि के मन में यह विचार आया कि उन्हें व्याकरणशास्त्र को व्यवस्थित करना चाहिए। पहले तो पाणिनि से पूर्व वैदिक संहिताओं, शाखाओं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि का जो विस्तार हो चुका था उस वाङ्मय से उन्होंने अपने लिये शब्दसामग्री ली जिसका उन्होंने अष्टाध्यायी में उपयोग किया है। दूसरे निरुक्त और व्याकरण की जो सामग्री पहले से थी उसका उन्होंने संग्रह और सूक्ष्म अध्ययन किया। इसका प्रमाण भी अष्टाध्यायी में है, [1,2,3]
जैसा शाकटायन, शाकल्य, भारद्वाज, गार्ग्य, सेनक, आपिशलि, गालब और स्फोटायन आदि आचार्यों के मतों के उल्लेख से ज्ञात होता है। शाकटायन निश्चित रूप से पाणिनि से पूर्व के वैयाकरण थे, जैसा निरुक्तकार यास्क ने लिखा है। शाकटायन का मत था कि सब संज्ञा शब्द धातुओं से बनते हैं। पाणिनि ने इस मत को स्वीकार किया किंतु इस विषय में कोई आग्रह नहीं रखा और यह भी कहा कि बहुत से शब्द ऐसे भी हैं जो लोक की बोलचाल में आ गए हैं और उनसे धातु प्रत्यय की पकड़ नहीं की जा सकती। तीसरी सबसे महत्वपूर्ण बात पाणिनि ने यह की कि उन्होंने स्वयं लोक को अपनी आँखों से देखा और घूमकर लोगों के बहुमुखी जीवन का परिचय प्राप्त करके शब्दों को छाना। इस प्रकार से कितने ही सहस्र शब्दों को उन्होंने इकट्ठा किया।

शब्दों का संकलन करके उन्होंने उनको वर्गीकृत किया और उनकी कई सूचियाँ बनाई। एक सूची "धातु पाठ" की थी जिसे पाणिनि ने अष्टाध्यायी से अलग रखा है। उसमें १९४३ धातुएँ हैं। धातुपाठ में दो प्रकार की धातुएँ हैं- १. जो पाणिनि से पहले साहित्य में प्रयुक्त हो चुकी थीं और दूसरी वे जो लोगों की बोलचाल में उन्हें मिली। उनकी दूसरी सूची में वेदों के अनेक आचार्य थे। किस आचार्य के नाम से कौन सा चरण प्रसिद्ध हुआ और उसमें पढ़नेवाले छात्र किस नाम से प्रसिद्ध थे और उन छन्द या शाखाओं के क्या नाम थे, उन सब की निष्पत्ति भिन्न भिन्न प्रत्यय लगाकर पाणिनि ने दी है; जैसे एक आचार्य तित्तिरि थे। उनका चरण तैत्तरीय कहा जाता था और उस विद्यालय के छात्र एवं वहाँ की शाखा या संहिता भी तैत्तिरीय कहलाती थी। पाणिनि की तीसरी सूची "गोत्रों" के संबंध में थी। मूल सात गोत्र वैदिक युग से ही चले आते थे। पाणिनि के काल तक आते आते उनका बहुत विस्तार हो गया था। गोत्रों की कई सूचियाँ श्रौत सूत्रों में हैं। [4,5,6]जैसे बोधायन श्रौत सूत्र में जिसे महाप्रवर कांड कहते हैं। किंतु पाणिनि ने वैदिक और लौकिक दोनों भाषाओं के परिवार या कुटुंब के नामों की एक बहुत बड़ी सूची बनाई जिसमें आर्ष गोत्र और लौकिक गोत्र दोनों थे। छोटे मोटे पारिवारिक नाम या अल्लों को उन्होंने गोत्रावयव कहा हैं। एक गोत्र या परिवार में होनेवाला दादा, बूढ़े एवं चाचा (सपिंड स्थविर पिता, पुत्र, पौत्र) आदि व्यक्तियों के नाम कैसे रखे जाते थे, इसका ब्योरेवार उल्लेख पाणिनि ने किया है।

बीसियों सूत्रों के साथ लगे हुए गणों में गोत्रों के अनेक नाम पाणिनि के "गणपाठ" नामक परिशिष्ट ग्रंथ में हैं। पाणिनि की चौथी सूची भौगोलिक थी। पाणिनि का जन्मस्थान उत्तर पश्चिम में था, जिस प्रदेश को हम गांधार कहते हैं। यूनानी भूगोल लेखकों ने लिखा है कि उत्तर पश्चिम अर्थात् गांधार और पंजाब में लगभग ५०० ऐसे ग्राम थे जिनमें से प्रत्येक की जनसंख्या दस सहस्र के लगभग थी। पाणिनि ने उन ५०० ग्रामों के वास्तविक नाम भी दे दिए हैं जिनसे उनके भूगोल संबंधी गणों की सूचियाँ बनी हैं। ग्रामों और नगरों के उन नामों की पहचान टेढ़ा प्रश्न है, किंतु यदि बहुत परिश्रम किया जाय तो यह संभव है जैसे सुनेत और सिरसा पंजाब के दो छोटे गाँव

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

हैं जिन्हें पाणिनि ने सुनेत्र और शैरीषक कहा है। पंजाब की अनेक जातियों के नाम उन गाँवों के अनुसार थे जहाँ वह जाति निवास करती थी या जहाँ से उसके पूर्वज आए थे। इस प्रकार निवास और अभिजन (पूर्वजों का स्थान) इन दोनों से जो उपनाम बनते थे वे पुरुष नाम में जुड़ जाते थे क्योंकि ऐसे नाम भी भाषा के अंग थे।

पाणिनि ने पंजाब के मध्यभाग में खड़े होकर अपनी दृष्टि पूर्व और पश्चिम की ओर दौड़ाई। उन्हें दो पहाड़ी इलाके दिखाई पड़े। पूर्व की ओर कुल्लू काँगड़ाँ जिसे उस समय त्रिगर्त कहते थे, पश्चिमी ओर का पहाड़ी प्रदेश वह था जो गांधार की पूर्वी राजधानी तक्षशिला से पश्चिमी राजधानी पुष्कलावती तक फैला था। इसी में वह प्रदेश था जिसे अब कबायली इलाका कहते हैं और जो सिंधु नद के उत्तर से दक्षिण तक व्याप्त था और जिसके उत्तरी छोर पर दरद (वर्तमान गिलगित) और दक्षिणी छोर पर सौबीर (वर्तमान सिंध) था। पाणिनि ने इस प्रदेश में रहनेवाले कबीलों की विस्तृत सूची बनाई और संविधानों का अध्ययन किया। इस प्रदेश को उस समय ग्रामणीय इलाका कहते थे क्योंकि इन कबीलों में, जैसा आज भी है और उस समय भी था, ग्रामणी शासन की प्रथा थी और ग्रामणी शब्द उनके नेता या शासक की पदवी थी। इन जातियों की शासनसभा को इस समय जिर्गा कहते हैं और पाणिनि के युग में उसे "ब्रातपूग", "संघ" या "गण" कहते थे। वस्तुत: सब कबीलों के शासन का एक प्रकार न था किंतु वे संघ शासन के विकास की भिन्न भिन्न अवस्थाओं में थे। पाणिनि ने व्रात और पूग इन संज्ञाओं से बताया है कि इनमें से बहुत से कबीले उत्सेधजीवी या लूटपाट करके जीवन बिताते थे जो आज भी वहाँ के जीवन की सच्चाई है। उस समय ये सब कबीले या जातियाँ हिंदू थीं [7,8,9] और उनके अधिपतियों के नाम संस्कृत भाषा के थे जैसे देवदत्तक, कबीले का पूर्वपुरुष या संस्थापक कोई देवदत्त था। अब नाम बदल गए हैं, किंतु बात वही है जैसे ईसाखेल कबीले का पूर्वज ईसा नामक कोई व्यक्ति था। इन कबीलों के बहुत से नाम पाणिनि के गणपाठ में मिलते हैं, जैसे अफरीदी और मोहमद जिन्हें पाणिनि ने आप्रीत और मधुमंत कहा है। पाणिनि की भौगोलिक सूचियों में एक सूची जनपदों की है। प्राचीन काल में अपना देश जनपद भूमियों में बैठा हुआ था। मध्य एशिया की वंक्षु नदी के उपरिभाग में स्थित कंबोज जनपद, पश्चिम में सौराष्ट्र का कच्छ जनपद, पूरब में असम प्रदेश का सूरमस जनपद (वर्तमान सूरमा घाटी) और दक्षिण में गोदावरी के किनारे अश्मक जनपद (वर्तमान पेठण) इन चार खूँटों के बीच में सारा भूभाग जनपदों में बँटा हुआ था और लोगों के राजनीतिक और सामाजिक जीवन एवं भाषाओं का जनपदीय विकास सहस्रों वर्षों से चला आता था।

पाणिनि ने सहस्रों शब्दों की व्युत्पत्ति बताई जो अष्टाध्यागी के चौथे पाँचवें अध्यायों में है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, सैनिक, व्यापारी किसान, रँगरेज, बढ़ई, रसोइए, मोची, ग्वाले, चरवाहे, गड़रिये, बुनकर, कुम्हार आदि सैकड़ों पेशेवर लोगों से मिलजुलकर पाणिनि ने उनके विशेष पेशे के शब्दों का संग्रह किया।

पाणिनि ने यह बताया कि किस शब्द में कौन सा प्रत्यय लगता है। वर्णमाला के स्वर और व्यंजन रूप जो अक्षर है उन्हीं से प्रत्यय बनाए गए। जैसे- वर्षा से वार्षिक, यहाँ मूल शब्द वर्षा है उससे इक् प्रत्यय जुड़ गया और वार्षिक अर्थात् वर्षा संबंधी यह शब्द बन गया।

अष्टाध्यायी में तद्वितों का प्रकरण रोचक है। कहीं तो पाणिनि की सूक्ष्म छानबीन पर आश्चर्य होता हैं, जैसे व्यास नदी के उत्तरी किनारे की बाँगर भूमि में जो पक्के बारामासी कुएँ बनाए जाते थे उनके नामों का उच्चारण किसी दूसरे स्वर में किया जाता था और उसी के दक्खिनी किनारे पर खादर भूमि में हर साल जो कच्चे कुएँ खोद लिए जाते थे उनके नामों का स्वर कुछ भिन्न था। यह बात पाणिनि ने "उदक् च बिपाशा" सूत्र में कही है। गायों और बैलों की तो जीवनकथा ही पाणिनि ने सूत्रों में भर दी है।[10,11,12]

आर्थिक जीवन का अध्ययन करते हुए पाणिनि ने उन सिक्कों को भी जाँचा जो बाजारों में चलते थे। जैसे "शतमान", "कार्षापण", "सुवर्ण", "अंध", "पाद", "माशक" "त्रिंशत्क" (तीस मासे या साठ रत्ती तौल का सिक्का), "विंशतिक" (बीस मासे की तौल का सिक्का)। कुछ लोग अदला-बदली से भी माल बेचते थे। उसे "निमान" कहा जाता था।

पाणिनि के काल में शिक्षा और वाङ्मय का बहुत विस्तार था। संस्कृत भाषा का उन्होंने बहुत ही गहरा अध्ययन किया था। वैदिक और लौकिक दोनों भाषाओं से वे पूर्णतया परिचित थे। उन्हीं की सामग्री से पाणिनि ने अपने व्याकरण की रचना की पर उसमें प्रधानता लौकिक संस्कृत की ही रखी। बोलचाल की लौकिक संस्कृत को उन्होंने भाषा कहा है। उन्होंने न केवल ग्रंथरचना को किंतु अध्यापन कार्य भी किया। (व्याकरण के उदाहरणों में उनके विषय का नाम कोत्स कहा है)। पाणिनि का शिक्षा विषयक संबंध, संभव है, तक्षशिला के विश्वविद्यालय से रहा हो। कहा जाता है, जब वे अपनी सामग्री का संग्रह कर चुके तो उन्होंने कुछ समय तक एकांतवास किया और अष्टाध्यायी की रचना की।

पाणिनि का समय क्या था, इस विषय में कई मत हैं। कोई उन्हें ७वीं शती ई. पू., कोई 5वीं शती या चौथी शती ई. पू. का कहते हैं। पतंजलि ने लिखा है कि पाणिनि की अष्टाध्यायी का संबंध किसी एक वेद से नहीं बल्कि सभी वेदों की परिषदों से था (सर्व वेद परिषद)। पाणिनि के ग्रंथों की सर्वसम्मत प्रतिष्ठा का यह भी कारण हुआ।

पाणिनि को किसी मतविशेष में पक्षपात न था। शब्द का अर्थ एक व्यक्ति है या जाति, इस विषय में उन्होंने दोनों पक्षों को माना है। गऊ शब्द एक गाय का भी वाचक है और गऊ जाति का भी। वाजप्यायन और व्याडि नामक दो आचार्यों में भिन्न मतों का आग्रह था, पर पाणिनि ने सरलता से दोनों को स्वीकार कर लिया।[13,14,15]

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

पाणिनि से पूर्व एक प्रसिद्ध व्याकरण इंद्र का था। उसमें शब्दों का प्रातिकंठिक या प्रातिपदिक विचार किया गया था। उसी की परंपरा पाणिनि से पूर्व भारद्वाज आचार्य के व्याकरण में ली गई थी। पाणिनि ने उसपर विचार किया। बहुत सी पारिभाषिक संज्ञाएँ उन्होंने उससे ले लीं, जैसे सर्वनाम, अव्यय आदि और बहुत सी नई बनाई, जैसे टि, घु, भ आदि।

पाणिनि को मांगलिक आचार्य कहा गया है। उनके हृदय की उदार वृत्ति मंगलात्मक कर्म और फल की इच्छुक थी। इसकी साक्षी यह है कि उन्होंने अपने शब्दानुशासन का आरंभ "वृद्ध" शब्द से किया। कुछ विद्वान् कहते हैं कि पाणिनि के ग्रंथ में न केवल आदिमंगल बल्कि मध्यमंगल और अंतमंगल भी है। उनका अंतिम सूत्र अ आ है। ह्रस्वकार वर्णसमन्वय का मूल है। पाणिनि को सुहृद्भूत आचार्य अर्थात् सबके मित्र एवं प्रमाणभूत आचार्य भी कहा है।

पतंजलि का कहना है कि पाणिनि ने जो सूत्र एक बार लिखा उसे काटा नहीं। व्याकरण में उनके प्रत्येक अक्षर का प्रमाण माना जाता है। शिष्य, गुरु, लोक और वेद धातुलि शब्द और देशी शब्द जिस ओर आचार्य ने दृष्टि डाली उसे ही रस से सींच दिया। आज भी पाणिनि "शब्द:लोके प्रकाशते", अर्थात् उनका नाम सर्वत्र प्रकाशित है।

विचार-विमर्श

इनका समयकाल अनिश्चित तथा विवादित है। इतना तय है कि छठी सदी ईसा पूर्व के बाद और चौथी सदी ईसापूर्व से पहले की अवधि में इनका अस्तित्व रहा होगा। ऐसा माना जाता है कि इनका जन्म पंजाब (पाकिस्तान) के शालातुला में हुआ था जो आधुनिक पेशावर (पाकिस्तान) के करीब है। इनका जीवनकाल ५२०-४६० ईसा पूर्व माना जाता है।

पाणिनि के जीवनकाल को मापने के लिए यवनानी शब्द के उद्धरण का सहारा लिया जाता है। इसका अर्थ यूनान की स्त्री या यूनान की लिपि से लगाया जाता है। गांधार में यवनो (ग्रीक्स्) के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी सिकंदर के आक्रमण के पहले नहीं थी। सिकंदर भारत में ईसा पूर्व ३३० के आसपास आया था। पर ऐसा हो सकता है कि पाणिनि को फारसी यौन के जरिये यवनों की जानकारी होगी और पाणिनि दारा प्रथम (शासनकाल - ५२१-४८५ ईसा पूर्व) के काल में भी हो सकते हैं। प्लूटार्क के अनुसार सिकंदर जब भारत आया था तो यहां पहले से कुछ यूनानी बस्तियां थीं।[16,17,18]

कृतियाँ

१- अष्टाध्यायी (सूत्रपाठ) - इसमे ८ अध्याय एवं कुल लगभग ४००० सूत्र हैं।

२- धातुपाठ - यह १० गणों में विभक्त एवं लगभग २००० धातुवें हैं

३- गणपाठ- सूत्रपठित गणों का पाठ

४- उणादिसूत्र -- इनके पाणिनिकृत होने में बहुत सन्देश है।

५- लिंगानुशासन- लिंग निर्धारण विषय

कात्यायन ने पाणिनि के सूत्रों पर वार्तिक लिखे। पतञ्जलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी पर अपनी टिप्पणी लिखी जिसे महाभाष्य का नाम दिया (महा+भाष्य (समीक्षा, टिप्पणी, विवेचना, आलोचना))।

अन्य रचनाएँ

पाणिनि को दो साहित्यिक रचनाओं के लिए भी जाना जाता है, यद्यपि वे अब प्राप्य नहीं हैं।

- जाम्बवती विजय आज एक अप्राप्य रचना है जिसका उल्लेख राजशेखर नामक व्यक्ति ने जह्लण की सूक्ति मुक्तावली में किया है। इसका एक भाग रामयुक्त की नामलिंगानुशासन की टीका में भी मिलता है।

राजशेखर ने जह्लण की सूक्तिमुक्तावली में लिखा है:[19,20,21]

> नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविर भूदिह।
> आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम् ॥

- पाताल विजय, जो आज अप्राप्य रचना है, जिसका उल्लेख नामिसाधु ने रुद्रटकृत काव्यालंकार की टीका में किया है।

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

पाणिनि का महत्त्व

एक शताब्दी से भी पहले प्रसिद्ध जर्मन भारतविद् मैक्स मूलर (१८२३-१९००) ने अपने साइंस ऑफ थाट में कहा -

"मैं निर्भीकतापूर्वक कह सकता हूँ कि अंग्रेज़ी या लैटिन या ग्रीक में ऐसी संकल्पनाएँ नगण्य हैं जिन्हें संस्कृत धातुओं से व्युत्पन्न शब्दों से अभिव्यक्त न किया जा सके। इसके विपरीत मेरा विश्वास है कि २,५०,००० शब्द सम्मिलित माने जाने वाले अंग्रेज़ी शब्दकोश की सम्पूर्ण सम्पदा के स्पष्टीकरण हेतु वांछित धातुओं की संख्या, उचित सीमाओं में न्यूनीकृत पाणिनीय धातुओं से भी कम है। .... अंग्रेज़ी में ऐसा कोई वाक्य नहीं जिसके प्रत्येक शब्द का ८०० धातुओं से एवं प्रत्येक विचार का पाणिनि द्वारा प्रदत्त सामग्री के सावधानीपूर्वक वेश्लेषण के बाद अविशष्ट १२१ मौलिक संकल्पनाओं से सम्बन्ध निकाला न जा सके।"

पाणिनि की सूत्र शैली

पाणिनि के सूत्रों की शैली अत्यंत संक्षिप्त है। वे सूत्रयुग में ही हुए थे। श्रौत सूत्र, धर्म सूत्र, गृहस्थसूत्र, प्रातिशाख्य सूत्र भी इसी शैली में है किंतु पाणिनि के सूत्रों में जो निखार है वह अन्यत्र नहीं है। इसीलिये पाणिनि के सूत्रों को प्रतिष्णात सूत्र कहा गया है। पाणिनि ने वर्ण या वर्णमाला को १४ प्रत्याहार सूत्रों में बाँटा और उन्हें विशेष क्रम देकर ४२ प्रत्याहार सूत्र बनाए। पाणिनि की सबसे बड़ी विशेषता यही है जिससे वे थोड़े स्थान में अधिक सामग्री भर सके। यदि अष्टाध्यायी के अक्षरों को गिना जाय तो उसके ३९९५ सूत्र एक सहस्र श्लोक के बराबर होते हैं। पाणिनि ने संक्षिप्त ग्रंथरचना की और भी कई युक्तियाँ निकालीं जैसे अधिकार और अनुवृत्ति अर्थात् सूत्र के एक या कई शब्दों को आगे के सूत्रों में ले जाना जिससे उन्हें दोहराना न पड़े। अर्थ करने की कुछ परिभाषाएँ भी उन्होंने बनाई। एक बड़ी विचित्र युक्ति उन्होंने असिद्ध सूत्रों की निकाली। अर्थात् बाद का सूत्र अपने से पहले के सूत्र के कार्य को ओझल कर दे। पाणिनि का यह असिद्ध नियम उनकी ऐसी तंत्र युक्ति थी जो संसार के अन्य किसी ग्रंथ में नहीं पाई जाती।[22,23,24]

पाणिनि और आधुनिक भाषाशास्त्र

पाणिनि का कार्य १९वीं सदी में यूरोप में जाना जाने लगा, जिससे इसका आधुनिक भाषाशास्त्र पर खूब प्रभाव पड़ा। आरंभ में फ्रेन्ज़ बोप् ने पाणिनि का अध्ययन किया। बाद में बहुत सी रचनाओं से योरपीय संस्कृत के विद्वान् जैसे फर्नांडीस डी सॉसर, लियोनार्ड ब्लूमफील्ड और रोमन जैकब्सन् आदि प्रभावित हुए। फ्रिट्स् स्टाल ने योरप में भाषा पर भारतीय विचारों के प्रभाव की विवेचना की।

डी सॉसर्

पाणिनि और बाद के भारतीय भाषाशास्त्री भर्तृहरि का फ़र्डीनांड डि सॉसर के कई बुनियादी विचारों पर काफ़ी प्रभाव पड़ा। फ़र्डीनांड डि सॉसर संस्कृत के प्राध्यापक थे, जो कि आधुनिक संरचनात्मक भाषाशास्त्र के जनक कहे जाते हैं। सॉसर ने स्वयं अपने कुछ विचारों पर भारतीय व्याकरण के प्रभाव का ज़िक्र किया है। अपने १८८१ में प्रकाशित "डी लेम्पलोइ डु जेनिटिफ़ ऍब्सॉल्यु एन् सैन्स्क्रिट्" (संस्कृत में जेनेटिव् निरपेक्ष का प्रयोग) में, उन्होंने पाणिनि को विशेषरूप से ज़िक्र करके अपनी रचना को प्रभावित करने वाला बताया है।

लियोनार्ड् ब्लूम्फ़ील्ड्

अमेरिकी संरचनावाद के संस्थापक लियोनॉर्ड् ब्लूम्फ़ील्ड ने १९२७ में एक शोधपत्र लिखा जिसका शीर्षक था "ऑन् सम् रूल्स् ऑफ़ पाणिनि" (यानी, पाणिनि के कुछ नियमों पर)।

आज के औपचारिक तन्त्रों के साथ तुलना

पाणिनि का व्याकरण संसार का पहला औपचारिक तन्त्र (फ़ॉर्मल् सिस्टम्) है। इसका विकास १९वीं सदी के गोट्लॉब फ्रेज के अन्वेषणों और उसके बाद के गणित के विकासों से बहुत पहले ही हो गया था। अपने व्याकरण का स्वरूप बनाने में पाणिनि ने "सहायक प्रतीकों" का प्रयोग किया, जिसमें नये शब्दांशों को सिन्टैक्टिक श्रेणियों का विभाजन रखने के लिए प्रयोग किया, ताकि व्याकरण की व्युत्पत्तियों को यथेष्ट नियन्त्रित किया जा सके। ठीक यही तकनीक जब एमिल पोस्ट् ने दोबारा "खोजी", तो यह कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग भाषाओं की अभिकल्पना के लिए मानदण्ड बना।[10] आज संस्कृतविद् स्वीकार करते हैं कि पाणिनि का भाषीय औज़ार अनुप्रयुक्त पोस्ट-सिस्टम् के रूप में भली-भाँति वर्णित है। पर्याप्तमात्रा में प्रमाण मौजूद हैं कि इन प्राचीन लोगों को सहपाठ-संवेदी-व्याकरण (कन्टेक्स्ट-सेन्सिटिव ग्रामर) में महारत थी और कई जटिल समस्याओं को सुलझाने में व्यापक क्षमता थी।[25,26,27]

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

परिणाम

पाणिनि को उनके पाठ अष्टाध्यायी के लिए जाना जाता है, जो संस्कृत व्याकरण पर एक सूत्र -शैली का ग्रंथ है , [11] [8] 3,996 [17] "आठ अध्यायों" में भाषा विज्ञान , वाक्यविन्यास और शब्दार्थ पर छंद या नियम, जो व्याकरण शाखा का मूलभूत पाठ है। वेदांग , वैदिक काल के सहायक विद्वान अनुशासन । [18] [19] [20] उनके सूक्ति पाठ ने कई भाष्यों (टिप्पणियों) को आकर्षित किया, जिनमें से पतंजलि का महाभाष्य सबसे प्रसिद्ध है। [21] उनके विचारों ने बौद्ध धर्म जैसे अन्य भारतीय धर्मों के विद्वानों की टिप्पणियों को प्रभावित और आकर्षित किया । [22]

पाणिनि का संज्ञा यौगिकों का विश्लेषण अभी भी भारतीय भाषाओं में यौगिकीकरण के आधुनिक भाषाई सिद्धांतों का आधार बनता है । पाणिनि के व्याकरण के व्यापक और वैज्ञानिक सिद्धांत को पारंपरिक रूप से शास्त्रीय संस्कृत की शुरुआत के रूप में लिया जाता है । [23] उनके व्यवस्थित ग्रंथ ने संस्कृत को दो सहस्राब्दियों तक शिक्षा और साहित्य की प्रमुख भारतीय भाषा के रूप में प्रेरित किया और बनाया।

पाणिनि का रूपात्मक विश्लेषण का सिद्धांत 20वीं शताब्दी से पहले किसी भी समकक्ष पश्चिमी सिद्धांत से अधिक उन्नत था। [24] उनका ग्रंथ सृजनात्मक और वर्णनात्मक है, धातुभाषा और मेटा -नियमों का उपयोग करता है, और इसकी तुलना ट्यूरिंग मशीन से की गई है जिसमें किसी भी कंप्यूटिंग डिवाइस की तार्किक संरचना को एक आदर्श गणितीय मॉडल का उपयोग करके इसकी अनिवार्यता तक कम कर दिया गया है । [25]

पाणिनि संभवतः महाजनपद युग के दौरान उत्तर पश्चिम भारतीय उपमहाद्वीप [ए] में प्राचीन गांधार में शालतुरा में रहते थे। [7] [4]

पाणिनि नाम एक संरक्षक शब्द है जिसका अर्थ है पणिन का वंशज। [27] पतंजलि के महाभाष्य के श्लोक 1.75.13 और 3.251.12 के अनुसार उनका पूरा नाम दक्षिणपुत्र पाणिनि था , पहले भाग से पता चलता है कि उनकी माता का नाम दाक्षी था। [6]

डेटिंग

पाणिनि कब जीवित रहे, इसके बारे में कुछ निश्चित ज्ञात नहीं है, यहाँ तक कि वे किस शताब्दी में भी जीवित रहे। पाणिनि का समय सातवीं [28] [6] और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच का बताया गया है[28,29,30]

जॉर्ज कार्डोना (1997) ने पाणिनि-संबंधित अध्ययनों के अपने आधिकारिक सर्वेक्षण और समीक्षा में कहा है कि उपलब्ध साक्ष्य दृढ़ता से 400 और 350 ईसा पूर्व के बीच की डेटिंग का समर्थन करते हैं, जबकि पहले की डेटिंग व्याख्याओं पर निर्भर करती है और संभावित नहीं है। [30]

मुद्राशास्त्रीय निष्कर्षों के आधार पर , वॉन हिनुबर (1989) और फ़ॉक (1993) ने पाणिनि को चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य में रखा है.. [1] [2] [3] [29] पाणिनि का रुपया (ए 5.2.119, ए 5.2.120) , ए. 5.4.43, ए 4.3.153,) कई सूत्रों में एक विशिष्ट सोने के सिक्के, निष्क का उल्लेख करता है, [31] जिसे भारत में चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में पेश किया गया था। [3] हौबेन के अनुसार, "की तिथि" सी. 350 ईसा पूर्व ठोस सबूतों पर आधारित है जिसका अब तक खंडन नहीं किया गया है । पाणिनि की तिथि 350 ईसा पूर्व या उसके बाद के दशकों में। [29] ब्रोंखोर्स्ट के अनुसार,

...हिनुबर (1990:34-35) और फॉक (1993:303-304) द्वारा किए गए कार्यों के लिए धन्यवाद, अब हम जानते हैं कि पाणिनि, पूरी संभावना में, अशोक के काल की तुलना में कहीं अधिक निकट रहते थे । अब तक सोचा गया था. फॉक के तर्क के अनुसार, पाणिनी 350 ईसा पूर्व के बाद के दशक के दौरान रहे होंगे, यानी, मैसेडोनिया के अलेक्जेंडर के आक्रमण से ठीक पहले (या उसके समसामयिक रूप से?) [2]

कार्डोना ने पाणिनि के कालनिर्धारण के लिए आंतरिक साक्ष्य के दो प्रमुख टुकड़ों का उल्लेख किया है। [32] 4.1.49 में यवननि शब्द की घटना , एक लेखन (लिपि) सीक्यू क्यूनिफॉर्म लेखन, या ग्रीक लेखन का जिक्र करते हुए, 326 ईसा पूर्व सिकंदर महान के भारतीय अभियान के बाद पाणिनि के लिए एक तारीख का सुझाव देती है । कार्डोना ने इस संभावना को खारिज कर दिया, यह तर्क देते हुए कि यवननी एक यवन महिला को भी संदर्भित कर सकती है; और यह कि सिकंदर की विजय से पहले भारतीयों का यूनानी दुनिया से संपर्क था। [33] [नोट 3] पाणिनि के सूत्र 2.1.70 में कुमारश्रमण का उल्लेख है, जो श्रमण से लिया गया है , जो एक महिला त्यागी, सीक्यू " बौद्ध भिक्षुणियों " को संदर्भित करता है, जिसका अर्थ है कि पाणिनि को गौतम बुद्ध के बाद रखा जाना चाहिए । केबी पाठक (1930) ने तर्क दिया कि कुमारश्रमण एक जैन नन का भी उल्लेख कर सकते हैं, जिसका अर्थ है कि पाणिनि को बुद्ध के बाद रखा जाना जरूरी नहीं है। [32]

यह निश्चित नहीं है कि पाणिनि ने अपने काम की रचना के लिए लेखन का उपयोग किया था, हालांकि यह आम तौर पर सहमत है कि वह लेखन के एक रूप के बारे में जानते थे, जो कि लिपि ("लिपि") और लिपिकारा ("लेखक") जैसे शब्दों के संदर्भ पर आधारित

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

था। अष्टाध्यायी का खंड 3.2 . [36] [37] [38] वर्तमान उत्तर पश्चिम पाकिस्तान में लेखन की शुरूआत का काल निर्धारण , इसलिए पाणिनि के काल निर्धारण के बारे में अधिक जानकारी दे सकता है[31,32,33]

पाणिनि ने अपने पहले के कम से कम दस व्याकरणविदों और भाषाविदों का हवाला दिया है: एपिशाली, कश्यप , गार्ग्य, गालव, चक्रवर्मन, भारद्वाज , शाकटायन, शाकल्य, सेनका, स्फोटायन और यास्क । [45] कमल के. मिश्रा के अनुसार, पाणिनि ने यास्का के निरुक्त का संदर्भ दिया है , [46] "जिसका लेखन चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य का है" [47]

बृहत्कथा और मंजुश्री-मूल-कल्प दोनों में पाणिनि को नंद राजा (चौथी ई.पू.) का समकालीन बताया गया है । [48]

अन्य, भाषाई शैली के आधार पर, उनके कार्यों को छठी या पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व का बताते हैं, जैसे:

- बोड के अनुसार, पाणिनि का व्याकरण शास्त्रीय संस्कृत को परिभाषित करता है, इसलिए पाणिनि को कालानुक्रमिक रूप से वैदिक काल के उत्तरार्ध में , सातवीं से पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में रखा गया है। [26]
- एबी कीथ के अनुसार , संस्कृत पाठ जो पाणिनि द्वारा वर्णित भाषा से सबसे अधिक मेल खाता है, वह ऐतरेय ब्राह्मण (लगभग 8वीं - 6वीं ईसा पूर्व) है। [49]
- शार्फ़ के अनुसार, "उपनिषदों और वैदिक सूत्रों में पाई गई वैदिक भाषा से उनकी निकटता 5वीं या शायद 6वीं ई.पू. का संकेत देती है" [6]

स्थान

पाणिनि के निजी जीवन के बारे में कुछ भी निश्चित नहीं पता है। वल्लभी के सिलादित्य VII के एक शिलालेख में, [कौन?] उसे सलातुरिया कहा जाता है, जिसका अर्थ है "सलातुरा का आदमी"। [उद्धरण वांछित] इसका मतलब है कि पाणिनि प्राचीन गांधार (वर्तमान उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान) के सलातुरा में रहते थे , जो संभवतः लाहौर के पास था , जो सिंधु और काबुल नदियों के जंक्शन पर एक शहर था। [डी] [50] [51] 7वीं शताब्दी के चीनी विद्वान जुआनज़ांग के संस्मरणों के अनुसार , सिंधु पर सुओलुओडुलुओ नामक एक शहर था जहां पाणिनि का जन्म हुआ था, और उन्होंने किंगमिंग-लुन (संस्कृत: व्याकरण) की रचना की थी[34,35,36]

हार्टमुट शार्फ़ के अनुसार, पाणिनि अचमेनिद साम्राज्य की सीमाओं के करीब गांधार में रहते थे , और सिंधु घाटी की अचमेनिद विजय के बाद गांधार तब एक अचमेनियन क्षत्रप था । इसलिए, वह तकनीकी रूप से फ़ारसी विषय रहा होगा लेकिन उसके काम में फ़ारसी भाषा के बारे में कोई जागरूकता नहीं दिखती है। [6] [54] पैट्रिक ओलिवेल के अनुसार , पाणिनि के पाठ और अन्यत्र उनके संदर्भ से पता चलता है कि "वह स्पष्ट रूप से एक उत्तरवासी थे, शायद उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र से"। [55]

किंवदंतियाँ और बाद का स्वागत

पाणिनि का उल्लेख भारतीय दंतकथाओं और प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। उदाहरण के लिए, पंचतंत्र में उल्लेख है कि पाणिनि को एक शेर ने मार डाला था [37,38,39]

अगस्त, 2004 में पाणिनी को पांच रुपये के भारतीय डाक टिकट पर चित्रित किया गया था । [59] [60] [61] [62]

अष्टाध्यायी

पाणिनी के कार्यों में सबसे महत्वपूर्ण, अष्टाध्यायी एक व्याकरण है जो अनिवार्य रूप से संस्कृत भाषा को परिभाषित करता है। अपने समय में विशिष्ट वक्ताओं की बोली और रजिस्टर पर आधारित, यह पाठ पुरानी वैदिक भाषा की कुछ विशेषताओं का भी वर्णन करता है।

अष्टाध्यायी भाषा के हर पहलू को नियंत्रित करने वाले बीजगणितीय नियमों वाला एक अनुदेशात्मक और उत्पादक व्याकरण है । यह तीन सहायक ग्रंथों द्वारा पूरक है: अक्षरसमाम्नाय , धातुपाठ [ए] और गणपाठ [40,41,42]

वैदिक भजनों की भाषा को "भ्रष्टाचार" से बचाने के सदियों पुराने प्रयास से आगे बढ़ते हुए, अष्टाध्यायी भाषा परिवर्तन को रोकने के लिए तैयार की गई एक सशक्त, परिष्कृत व्याकरणिक परंपरा का उच्च बिंदु है। अष्टाध्यायी की प्रधानता इस तथ्य से रेखांकित होती है कि इसने पहले आए सभी समान कार्यों को पीछे छोड़ दिया: हालांकि यह पहला नहीं है, यह अपनी संपूर्णता में जीवित सबसे पुराना ऐसा पाठ है।[43,44,45]

अष्टाध्यायी में आठ अध्यायों में 3,959 सूत्र [सी] हैं, जिनमें से प्रत्येक को चार खंडों या पादों में विभाजित किया गया है । पाठ इनपुट के रूप में शाब्दिक सूचियों (धातुपाठ , गणपति) से सामग्री लेता है और अच्छी तरह से गठित शब्दों की पीढ़ी के लिए उन पर लागू होने वाले एल्गोरिदम का वर्णन करता है। इसकी जटिलता इतनी है कि इसके नियमों और मेटारूल्स के सही अनुप्रयोग पर सदियों बाद भी काम किया जा रहा है। [68] [69]

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

अष्टाध्यायी , उस युग में रचित थी जब मौखिक रचना और प्रसारण आदर्श था, उस मौखिक परंपरा में दृढ़ता से अंतर्निहित है । कहा जाता है कि व्यापक प्रसार सुनिश्चित करने के लिए, पाणिनि ने स्पष्टता के बजाय संक्षिप्तता को प्राथमिकता दी थी [70] - इसे दो घंटों में शुरू से अंत तक पढ़ा जा सकता है। इससे सदियों से उनके काम की बड़ी संख्या में टिप्पणियाँ [46,47,48]

भाटिकाव्य

शास्त्रीय काल के उत्तरार्ध में भारतीय पाठ्यक्रम की शिक्षा के केंद्र में व्याकरणिक अध्ययन और भाषाई विश्लेषण की एक प्रणाली थी। [72] इस अध्ययन का मुख्य पाठ पाणिनि का अष्टाध्यायी था, जो सीखने की अनिवार्य शर्त है । [73] पाणिनि का यह व्याकरण भाटिकाव्य की रचना से पहले दस शताब्दियों तक गहन अध्ययन का विषय रहा था । यह स्पष्ट रूप से भाटी का उद्देश्य था कि रामायण की मनोरंजक और नैतिक रूप से बेहतर कहानी के संदर्भ में मौजूदा व्याकरणिक टिप्पणियों में पहले से ही दिए गए उदाहरणों का उपयोग करके पाणिनि के पाठ को एक अध्ययन सहायता प्रदान की जाए । इस व्याकरण की सूखी हड्डियों को भट्टी ने अपनी कविता में रसदार मांस दिया है। लेखक का इरादा इस उन्नत विज्ञान को अपेक्षाकृत आसान और सुखद माध्यम से पढ़ाना था। उन्हीं के शब्दों में:

यह रचना शब्दों का अर्थ समझने वालों के लिए दीपक के समान है और व्याकरणहीनों के लिए अंधे व्यक्ति के लिए हाथ के दर्पण के समान है।

यह कविता, जिसे एक टिप्पणी के माध्यम से समझा जाना चाहिए, उन लोगों के लिए एक खुशी है जो पर्याप्त रूप से सीखे हुए हैं: विद्वान के प्रति अपने स्नेह के माध्यम से मैंने यहां सुस्ती को कम किया है।[49,50,51]

आधुनिक भाषाविज्ञान

पाणिनि का काम 19वीं सदी के यूरोप में जाना गया, जहां इसने शुरुआत में फ्रांज बोप के माध्यम से आधुनिक भाषा विज्ञान को प्रभावित किया , जो मुख्य रूप से पाणिनि को देखते थे। इसके बाद, काम के एक व्यापक समूह ने फर्डिनेंड डी सॉसर , लियोनार्ड ब्लूमफील्ड और रोमन जैकबसन जैसे संस्कृत विद्वानों को प्रभावित किया । फ्रिट्स स्टाल (1930-2012) ने यूरोप में भाषा पर भारतीय विचारों के प्रभाव पर चर्चा की। संपर्क के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित करने के बाद, स्टाल ने नोट किया कि भाषा में औपचारिक नियमों का विचार - 1894 में फर्डिनेंड डी सॉसर द्वारा प्रस्तावित और 1957 में नोम चॉम्स्की द्वारा विकसित - पाणिनियन व्याकरण के औपचारिक नियमों के यूरोपीय अनुभव में उत्पन्न हुआ है। [74] विशेष रूप से, डी सॉसर, जिन्होंने तीन दशकों तक संस्कृत पर व्याख्यान दिया, पाणिनि और भर्तृहरि से प्रभावित रहे होंगे ; संकेत में संकेतित संकेतक की एकता का उनका विचार कुछ हद तक स्फोटा की धारणा से मिलता जुलता है । इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह विचार कि औपचारिक नियमों को तर्क या गणित के बाहर के क्षेत्रों में भी लागू किया जा सकता है, संभवतः यूरोप के संस्कृत व्याकरणविदों के काम के संपर्क से प्रेरित हुआ होगा। [74]

डी सॉसर [52,53,54]

पाणिनि और बाद के भारतीय भाषाविद् भर्तृहरि का संस्कृत के प्रोफेसर फर्डिनेंड डी सॉसर द्वारा प्रस्तावित कई मूलभूत विचारों पर महत्वपूर्ण प्रभाव था , जिन्हें व्यापक रूप से आधुनिक संरचनात्मक भाषाविज्ञान का जनक माना जाता है और दूसरी ओर चार्ल्स एस. पीयर्स थे । लाक्षणिकता के लिए , हालाँकि सॉसर ने जिस अवधारणा का प्रयोग किया वह लाक्षणिकता थी । सॉसर ने स्वयं अपने कुछ विचारों पर भारतीय व्याकरण के प्रभाव का हवाला दिया। 1879 में प्रकाशित अपने मेमोइर सुर ले सिस्टेम प्राइमिटिफ़ डेस वॉयलेज़ डान्स लेस लैंग्वेस इंडो-यूरोपियन्स (इंडो-यूरोपीय भाषाओं में स्वरों की मूल प्रणाली पर संस्मरण) में, उन्होंने अपने विचार पर प्रभाव के रूप में भारतीय व्याकरण का उल्लेख किया है कि "दोगुने सिद्धांतवादी अपूर्णताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं एक मौखिक वर्ग का।" 1881 में प्रकाशित अपने डी ल'एम्प्लोई डु जेनिटिफ़ एब्सोलु एन संस्कृत (संस्कृत में जेनिटिव एब्सोल्यूट के उपयोग पर) में, उन्होंने विशेष रूप से काम पर प्रभाव के रूप में पाणिनि का उल्लेख किया है। [75]

प्रेम सिंह ने 1998 में पाणिनि के व्याकरण के जर्मन अनुवाद के पुनर्मुद्रित संस्करण की प्रस्तावना में निष्कर्ष निकाला कि "पाणिनि के काम का भारत-यूरोपीय भाषाविज्ञान पर प्रभाव विभिन्न अध्ययनों में दिखता है" और "कई मौलिक कार्य दिमाग में आते हैं" ," जिसमें सॉसर के कार्य और वह विश्लेषण शामिल है जिसने " लेरिन्जियल सिद्धांत को जन्म दिया ," आगे बताते हुए: "इस प्रकार का संरचनात्मक विश्लेषण पाणिनि के विश्लेषणात्मक शिक्षण के प्रभाव का सुझाव देता है।" जॉर्ज कार्डोना , हालांकि, आधुनिक भाषा विज्ञान पर पाणिनि के प्रभाव को अधिक महत्व देने के खिलाफ चेतावनी देते हैं: "हालांकि सॉसर उन पूर्ववर्तियों को भी संदर्भित करता है[55,56,57] जिन्होंने इस पाणिनियन नियम को ध्यान में रखा था, यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि उनका पाणिनि के काम से सीधा परिचय था। जहां तक बात है सॉसर के संस्मरण को दोबारा पढ़ने पर मैं समझने में सक्षम हूं , हालांकि, यह पैनिनियन व्याकरण का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं दिखाता है। वास्तव में, कभी-कभी, सॉसर उस पथ का अनुसरण करता है जो पैनिनियन प्रक्रिया के विपरीत है।" [75] [76]

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

लियोनार्ड ब्लूमफ़ील्ड

अमेरिकी संरचनावाद के संस्थापक, लियोनार्ड ब्लूमफील्ड ने 1927 में "पाणिनि के कुछ नियमों पर" शीर्षक से एक पेपर लिखा था। [77]

ऋषि राजपोपत

ऋषि राजपोपत ने 2021 में अपनी पीएचडी थीसिस [78] में नियम संघर्षों को हल करने की एक सरल प्रणाली को डिजाइन करके पाणिनि की "भाषा मशीन" की गहरी समझ को विस्तार से बताया। [79] [80]

आधुनिक औपचारिक प्रणालियों के साथ तुलना [58,59,60]

पाणिनि का व्याकरण दुनिया की पहली औपचारिक प्रणाली है, जो गोटलोब फ्रीज के 19वीं शताब्दी के नवाचारों और गणितीय तर्क के बाद के विकास से काफी पहले विकसित हुई थी। अपने व्याकरण को डिजाइन करने में, पाणिनि ने "सहायक प्रतीकों" की विधि का उपयोग किया, जिसमें वाक्यात्मक श्रेणियों को चिह्नित करने और व्याकरणिक व्युत्पत्तियों के नियंत्रण के लिए नए प्रत्यय निर्दिष्ट किए जाते हैं।[ ] तर्कशास्त्री एमिल पोस्ट द्वारा पुनः खोजी गई यह तकनीक, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषाओं के डिजाइन में एक मानक विधि बन गई । [81] [82] संस्कृतज्ञ अब स्वीकार करते हैं कि पाणिनि का भाषाई तंत्र एक "अनुप्रयुक्त" पोस्ट प्रणाली के रूप में अच्छी तरह से वर्णित है। उल्लेखनीय साक्ष्य संदर्भ-संवेदनशील व्याकरण की प्राचीन महारत और कई जटिल समस्याओं को हल करने की सामान्य क्षमता को दर्शाते हैं। फ्रिट्स स्टाल ने लिखा है कि "पाणिनि भारतीय यूक्लिड हैं ।

अन्य कार्य

दो साहित्यिक रचनाएँ पाणिनि की देन हैं, हालाँकि वे अब लुप्त हो चुकी हैं।

- जाम्बवती विजया एक खोई हुई कृति है जिसका हवाला राजशेखर ने जाल्हण की सूक्ति मुक्तावली में दिया है । नमलिंगानुशासन पर रामायुक्त की टिप्पणी में एक अंश मिलता है। शीर्षक से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह काम कृष्ण द्वारा अंडरवर्ल्ड में जाम्बवती को अपनी दुल्हन के रूप में जीतने से संबंधित है। जाहलाना की सूक्ति मुक्तावली में राजशेखर :

  नमः पाणिन्ये तस्मै यस्मादाविर बुधिः।
  आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतजयम् ॥[61,62,63]

  नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिः।
  अदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतिजयम् ॥

  - पाणिनि से संबंधित, पाताल विजया एक खोई हुई कृति है जिसका उल्लेख नमिसाधु ने रुद्रत के काव्यालंकार पर अपनी टिप्पणी में किया है ।

  पाणिनि के कार्यों से संबंधित कई गणितीय कार्य हैं। पाणिनि अपने समय के ज्ञात व्याकरणिक रूपों को व्यवस्थित तरीके से व्यवस्थित करने के लिए ढेर सारे विचार लेकर आए। किसी ज्ञात घटना को गणितीय भाषा में मॉडल करने वाले किसी भी गणितज्ञ की तरह, पाणिनि ने एक धातुभाषा बनाई और यह बीजगणित के आधुनिक विचारों के बहुत करीब है। भास्कर कोम्पेला द्वारा लिखित " पाणिनि की अष्टाध्यायी की गणितीय संरचनाएँ" देखें ।[64,65,66]

निष्कर्ष

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन में स्थित मध्य प्रदेश का एक विश्वविद्यालय है। उज्जैन के सांस्कृतिक और पौराणिक महत्व को ध्यान में रखते हुए राज्य शासन ने संस्कृत भाषा और प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के अभिवर्धन एवं प्रसार हेतु उज्जैन में संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया। महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 (क्रमांक 15 सन् 2008) के तहत 15 अगस्त 2008 से इस विश्वविद्यालयए की स्थापना की गई तथा 17 अगस्त 2008 को राज्य के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में तत्कालीन राज्यपाल एवं कुलाधिपति डॉ॰ बलराम जाखड़ द्वारा इसका विधिवत् शुभारंभ किया गया।[67,68,69]

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

विश्वविद्यालय का कार्यालय देवास रोड, उज्जैन स्थित बिड़ला शोध संस्थान परिसर में दिनांक 17 अगस्त 2008 से प्रारंभ किया गया। विश्वविद्यालय का कार्यालय क्षिप्रांजली न्यास की भूमि में स्थित बिरला शोध संस्थान के भवन में विधिवत् संचालित हो रहा है। भूमि का कुल क्षेत्रफल 1,25,420 वर्गफीट के लगभग है तथा भवन का क्षेत्रफल लगभग 10,200 वर्गफीट है। इसी भवन में कार्यालय के अतिरिक्त पाँच विश्वविद्यालय अध्यापन विभागों की कक्षायें भी लगायी जा रही हैं। भवन किराये पर है।

दिनांक 25.3.2010 को मध्यप्रदेश विद्यानसभा द्वारा 'महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन' के अधिनियम में 'वैदिक' शब्द को जोड़े जाने के सम्बन्ध में संशोधन का प्रस्ताव पारित किया गया। तदनुसार इस विश्वविद्यालय का नाम 'महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय' के स्थान पर 'महर्षि पाणिनि संस्कृत एवम् वैदिक विश्वविद्यालय' हुआ। इस विश्वविद्यालय में संस्कृत भाषा के पारंपरिक विषयों जैसे शुक्लयजुर्वेद/ नव्य व्याकरण/ फलित ज्योतिष/ सिद्धान्त ज्योतिष एवं साहित्य में शास्त्री (BA), आचार्य (MA), के अध्ययन अध्यापन एवं विशिष्टाचार्य (M. Phil.), विद्यावारिधि (Ph.d) में शोध की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त BA (संस्कृत प्राच्य) M A (संस्कृत प्राच्य)/ ज्योतिर्विज्ञान का अध्ययन का एकमात्र श्रेष्ठ केंद्र है।[70,71,72] सत्र जुलाई 2018-19 से विश्वविद्यालय परिसर में चार वर्षीय एकीकृत शास्त्री-शिक्षाशास्त्री(B.A.B.ED.) पाठ्यक्रम भी आरम्भ किया जा रहा है। यह भारत का प्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय है जिसके परिसर में यह पाठ्यक्रम आरम्भ हो रहा है। विश्वविद्यालय में संस्कृत के एक वर्षीय व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी संचालित हैं जिनसे शीघ्र ही स्वरोजगार प्राप्त किया जा सकता है। इनमें एक वर्षीय व्यावसायिक ज्योतिष डिप्लोमा/ व्यावसायिक वास्तुशास्त्र/ संस्कृत संभाषण / पौरोहित्य पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त हस्तरेखा विज्ञान , रत्नविज्ञान एवं अन्य प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम भी संचालित है।[73,74]

संदर्भ

1. Vergiani 2017, पृ॰ 243, n.4.
2. ↑ Bronkhorst 2016, पृ॰ 171.
3. ↑ Houben 2009, पृ॰ 6.
4. ↑ Cardona 1997, पृ॰ 268.
5. ↑ Staal 1996, पृ॰ 39.
6. ↑ Scharfe 1977, पृ॰ 88.
7. ↑ Staal 1965.
8. ↑ "A reminder: Panini didn't destroy lingual diversities with his Sanskrit grammar, he unified them". मूल से 27 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 27 मई 2019.
9. ↑ कैड्वेनी, जॉन (2007), "पोज़ीश्नल् वेल्यू एंड लिंग्विस्टिक् रिकर्शन्", जर्नल् ऑफ़् इन्डियन् फ़िलॉस्फ़ी 35: 587-520.
10. जेम्स जी. लोचटेफेल्ड (2002)। हिंदू धर्म का सचित्र विश्वकोश: एनजेड । रोसेन प्रकाशन समूह। पी। 497 . आईएसबीएन 978-0-8239-3180-4.
11. ^ हर्टमट शार्फ़ (1977)। व्याकरणिक साहित्य . ओटो हैरासोवित्ज़ वेरलाग। पृ. 152-154. आईएसबीएन 978-3-447-01706-0.
12. ^ युजी कावागुची; मकोतो माइनगिशी; वोल्फगैंग विरेक (2011)। कॉर्पस-आधारित विश्लेषण और डायक्रोनिक भाषाविज्ञान । जॉन बेंजामिन प्रकाशन कंपनी। पृ. 223-224. आईएसबीएन 978-90-272-7215-7.
13. ^ स्टाल, फ्रिट्स (1988)। सार्वभौमिक: भारतीय तर्क और भाषा विज्ञान में अध्ययन । शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस. पी। 47. आईएसबीएन 9780226769998.
14. ^ काक, सुभाष सी. (जनवरी 1987)। "प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण के लिए पैनिनियन दृष्टिकोण" । एप्रोक्सिमेट रिजनिंग का अन्तरराष्ट्रीय जर्नल । 1 (1): 117-130. डीओआई : 10.1016/0888-613X(87)90007-7 ।
15. ^ [ए] [बी]ऊपर जायें: बोड 2013 , पृ. 14-18.
16. ^ पाणिनि; सुमित्रा मंगेश कटरे (1989)। पाणिनि की अष्टाध्यायी । मोतीलाल बनारसीदास. पी। xx. आईएसबीएन 978-81-208-0521-7.
17. बोड 2013 , पृ. 14.
18. ब्रोंखोर्स्ट 2019 ।
19. ^ कार्डोना 1997 , पीपी 261-268, उद्धरण: "।
20. ^ पाणिनि (1989)। पाणिनि की अष्टाध्यायी । मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन. आईएसबीएन 978-81-208-0521-7.
21. कार्डोना 1997 , पृ. 261-262.

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

22. ^ कार्डोना 1997 , पृ. 261.
23. ^ मैक्स मुलर (1862)। प्राचीन हिंदू खगोल विज्ञान और कालक्रम पर । ऑक्सफ़ोर्ड। पीपी. 69-71 के फ़ुटनोट। बिबकोड : 1862एएचएसी.पुस्तक...एम ।
24. ^ पैट्रिक ओलिवेल (1999)। धर्मसूत्र . ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पी। xxxii फ़ुटनोट 13 के साथ । आईएसबीएन 978-0-19-283882-7.
25. ^ रिचर्ड सॉलोमन (1998)। भारतीय पुरालेख: संस्कृत, प्राकृत और अन्य इंडो-आर्यन भाषाओं में शिलालेखों के अध्ययन के लिए एक मार्गदर्शिका । ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पी। 11. आईएसबीएन 978-0-19-535666-3.
26. ^ जुहयुंग री (2009)। "सभ्यताओं की परिधि पर: गांधार में एक दृश्य परंपरा का विकास"। सेंट्रल यूरेशियन स्टडीज जर्नल । 1 :5, 1-13.
27. ^ रीता शेरमा; अरविंद शर्मा (2008)। हेर्मेनेयुटिक्स और हिंदू विचार: क्षितिज के एक संलयन की ओर । स्प्रिंगर. पी। 235. आईएसबीएन 978-1-4020-8192-7.
28. ^ फॉक, हैरी (1993)। श्रिफ्ट इम ऑल्टेन इंडियन: ईन फ़ोर्सचुंग्सबेरिच्ट मिट एंमेरकुंगेन (जर्मन में)। गुंटर नार वेरलाग। पृ. 109-167.
29. ^ सॉलोमन, रिचर्ड (1995)। "समीक्षा: प्रारंभिक भारतीय लिपियों की उत्पत्ति पर"। अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी का जर्नल । 115 (2): 271-278. डीओआई : 10.2307/604670 । जेएसटीओआर 604670 ।
30. ^ शार्फ़, हर्टमट (2002), प्राचीन भारत में शिक्षा , ओरिएंटल अध्ययन की पुस्तिका, लीडेन, नीदरलैंड: ब्रिल, पीपी. 10-12
31. ^ ऑस्कर वॉन हिनुबर (1989)। भारत में डेर बिगिन डेर श्रिफ्ट अंड फ्रूहे श्रिफ्टलिचकिट । अकादेमी डेर विसेनशाफ्टन अंड डेर लिटरेचर। पृ. 241-245. आईएसबीएन 9783515056274. ओसीएलसी 22195130 ।
32. ^ जैक गुडी (1987)। लिखित और मौखिक के बीच का इंटरफ़ेस । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 110-124 . आईएसबीएन 978-0-521-33794-6.
33. ^ जोहान्स ब्रोंखोर्स्ट (2002), प्राचीन भारत में साक्षरता और तर्कसंगतता, एशियाटिस स्टडीयन/एट्यूड्स एशियाटिक्स, 56(4), पृष्ठ 803-804, 797-831
34. ^ कार्डोना 1997, §1.3.
35. ^ द्विवेदी, अमिताभ विक्रम (2018), जैन, पंकज; शेरमा, रीता; खन्ना, मधु (संस्करण), "निरुक्त" , हिंदू धर्म और जनजातीय धर्म , भारतीय धर्मों का विश्वकोश, डॉर्ड्रेक्ट: स्प्रिंगर नीदरलैंड, पीपी. 1-5, डीओआई : 10.1007/978-94-024-1036-5_376-1 , आईएसबीएन 978-94-024-1036-5, 4 अक्टूबर 2022 को पुनःप्राप्त
36. मिश्रा 2000 , पृ. 49.
37. ^ [प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का इतिहास: पाषाण युग से 12वीं शताब्दी तक, उपिंदर सिंह, पियर्सन एजुकेशन इंडिया, 2008 पी। 258]
38. ^ कीथ, आर्थर बेरीडेल (1998)। ऋग्वेद ब्राह्मण: ऋग्वेद के ऐतरेय और कौशीतकी ब्राह्मण । दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास. आईएसबीएन 978-8120813595. ओसीएलसी 611413511 ।
39. हर्टमट शार्फ़ (1977)। व्याकरणिक साहित्य . ओटो हैरासोवित्ज़ वेरलाग। पृष्ठ 88 फ़ुटनोट के साथ। आईएसबीएन 978-3-447-01706-0.
40. ^ सरोजा भाटे, पाणिनि , साहित्य अकादमी (2002), पृ. 4
41. ^ सिंह, नागेंद्र क्र., एड. (1997), एनसाइक्लोपीडिया ऑफ हिंदूइज्म , नई दिल्ली: सेंटर फॉर इंटरनेशनल रिलीजियस स्टडीज: अनमोल प्रकाशन, पीपी. 1983-2007, आईएसबीएन 978-81-7488-168-7
42. ^ मिश्रा, गिरिधर (1981)। "प्रस्तावना" [परिचय]। अध्यात्मरामायणेऽपाणिनीयप्रयोगानां चर्चाः [अध्यात्म रामायण में गैर-पाणिनीय प्रयोगों पर विचार-विमर्श] (संस्कृत में)। वाराणसी, भारत: संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय । 21 मई 2013 को लिया गया .
43. ^ लाल, श्याम बिहारी (2004)। "प्राचीन भारतीय शिलालेखों में यवन"। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही । 65 : 1115-1120. आईएसएसएन 2249-1937 । जेएसटीओआर 44144820 ।
44. ^ पैट्रिक ओलिवेल (1999)। धर्मसूत्र . ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पीपी. xxvi–xxvii. आईएसबीएन 978-0-19-283882-7.
45. ^ जॉर्ज कार्डोना (1997)। पाणिनि: शोध का एक सर्वेक्षण । श्लोक में लिखा है सिंहो व्याकरणस्य कर्तुर अहारत प्राणान प्रियन पाणिनेः "एक शेर ने व्याकरण ग्रंथ के लेखक पाणिनि की प्रिय जान ले ली"। प्रसंग जानवरों द्वारा मारे गए विद्वानों की सूची है, सिंहो व्याकरणस्य कर्तुर आहारं प्राणान प्रियं पाणिनेः / मीमांसाकृतं उन्ममथ सहसा हस्ति मुनिं जैमिनिम // चंदोजनानिधिम जघना मकारो वेला। तते पिङ्गलम् / अज्ञानावृत्तसेटसाम् अतिरूषाम् कोरथस तिरश्चम् गुणैः // अनुवाद:

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

" एक सिंह ने पाणिनि को मार डाला; एक हाथी ने मीमांसा के रचयिता ऋषि जैमिनी को पागलों की तरह कुचल दिया; काव्य छंद के ज्ञान के भंडार पिंगला को पानी के किनारे एक मगरमच्छ ने मार डाला। क्रोध से अभिभूत मूर्ख जानवर बौद्धिक गुणों की क्या परवाह करते हैं?" (पंचतंत्र II.28, कभी-कभी वल्लभदेव को बताया जाता है)

46. ^ भट्टाचार्य, डीसी (1928)। "सुभासितावली की तिथि"। ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी का जर्नल । 60 (1): 135-137. डीओआई : 10.1017/S0035869X00059773 । जेएसटीओआर 25221320 । एस2सीआईडी 162641089 ।
47. ^ विंटरनित्ज़, मोरिज़ (1963)। भारतीय साहित्य का इतिहास . मोतीलाल बनारसीदास. पी। 462. आईएसबीएन 978-81-208-0056-4.; नाकामुरा, हाजीमे (1983)। प्रारंभिक वेदांत दर्शन का इतिहास । मोतीलाल बनारसीदास. पी। 400. आईएसबीएन 978-81-208-0651-1.
48. ^ "टिकट 2004" । भारतीय डाक विभाग, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय। 23 अप्रैल 2015 । 3 जून 2015 को लिया गया .
49. ^ "पाणिनि" । www.istampgallery.com । 23 अक्टूबर 2015 । 11 दिसंबर 2018 को लिया गया ।
50. ^ अकादमी, हिमालयन। "हिंदू धर्म टुडे पत्रिका" । www.hinduismtoday.com . 11 दिसंबर 2018 को लिया गया ।
51. ^ "पाणिनि पर भारतीय डाक टिकट 01 अगस्त 2004 को जारी किया गया" । www.getpincodes.com । 11 दिसंबर 2018 को लिया गया ।
52. ^ कार्डोना, §1-3.
53. बुरो, §2.1.
54. ^ कॉल्सन, पृ. xv.
55. ^ व्हिटनी, पृ. xii.
56. ^ कार्डोना, §4.
57. ^ "कैम्ब्रिज पीएचडी छात्र ने 2,500 साल पुरानी संस्कृत समस्या का समाधान किया" । बीबीसी समाचार । 15 दिसंबर 2022.
58. ^ "व्याकरण की सबसे बड़ी पहेली को हल करना" । कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय । 15 दिसंबर 2022.
59. ^ व्हिटनी, पृ. तेरहवें
60. ^ कॉल्सन, पृष्ठ xvi.
61. ^ फ़िलियोज़ैट। 2002 संस्कृत भाषा: एक सिंहावलोकन - इतिहास और संरचना, भाषाई और दार्शनिक प्रतिनिधित्व, उपयोग और उपयोगकर्ता। इंडिका बुक्स.
62. ^ फॉलन, ओलिवर. 2009. भट्टी की कविता: रावण की मृत्यु (भौतिकाव्य)। न्यूयॉर्क: क्ले संस्कृत लाइब्रेरी [1] । आईएसबीएन 978-0-8147-2778-2 | आईएसबीएन 0-8147-2778-6 |
63. फ्रिट्स स्टाल, भाषा का विज्ञान, अध्याय 16, गेविन डी. फ्लड में , संस्करण। द ब्लैकवेल कम्पेनियन टू हिंदुइज्म ब्लैकवेल पब्लिशिंग , 2003, 599 पृष्ठ आईएसबीएन 0-631-21535-2 , आईएसबीएन 978-0-631-21535-6 । पी। 357-358
64. जॉर्ज कार्डोना (2000), "पुस्तक समीक्षा: पैनिनिस ग्रैमैटिक ", जर्नल ऑफ़ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी , 120 (3): 464-5, जेएसटीओआर 606023
65. ^ डी'ओटावी, ग्यूसेप (2013)। "पाणिनी एट ले मेमोइरे" । एरिना रोमानिस्टिका । 12 : 164-193.("डी ल'एसेंस डबल डू लैंगेज" एट ले रेनोव्यू डू सॉसुरिस्मे में पुनर्मुद्रित । 2016।).
66. ^ लियोनार्ड ब्लूमफ़ील्ड (1927)। पाणिनि के कुछ नियमों पर . पीपी. 61-70. डीओआई : 10.2307/593241 । आईएसबीएन 9780226060712. जेएसटीओआर 593241 ।
67. ^ ऋषि राजपोपत (2022)। पाणिनि में हम भरोसा करते हैं: अष्टाध्यायी में नियम संघर्ष समाधान के लिए एल्गोरिदम की खोज (थीसिस)। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय। डीओआई : 10.17863/सीएएम.80099 ।
68. ^ "प्राचीन व्याकरणिक पहेली 2,500 वर्षों के बाद हल हुई" ।
69. ^ अल्मेरोथ-विलियम्स, टॉम (15 दिसंबर 2022)। "कैसे एक भारतीय छात्र ने 2,500 वर्षों में पहली बार संस्कृत की 'भाषा मशीन' को क्रियान्वित किया" । Scroll.in . 19 दिसंबर 2022 को लिया गया । पाणिनी के पास असाधारण दिमाग था और उन्होंने मानव इतिहास में बेजोड़ मशीन का निर्माण किया। उसने हमसे यह अपेक्षा नहीं की थी कि हम उसके नियमों में नये विचार जोड़ेंगे। जितना अधिक हम पाणिनि के व्याकरण के साथ खिलवाड़ करते हैं, उतना ही अधिक यह हमसे दूर हो जाता है।
70. ^ भाटे, एस. और काक, एस. (1993) पाणिनी और कंप्यूटर विज्ञान। भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट के इतिहास, खंड। 72, पृ. 79-94.

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 10, October 2023||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2022.1210012 |

71. ^ कडवनी, जॉन (2007), "पोजिशनल वैल्यू एंड लिंग्विस्टिक रिकर्सन", जर्नल ऑफ इंडियन फिलॉसफी , 35 (5-6): 487-520, साइटसीरएक्स 10.1.1.565.2083 , डीओआई : 10.1007/एस10781-007-9025-5 , S2CID 52885600 .
72. ^ विट्ज़ेल 2009 ।
73. ^ स्टाल 1965 , पृ. 99.
74. ^ बोड 2013 , पृ. 14, एन.2.

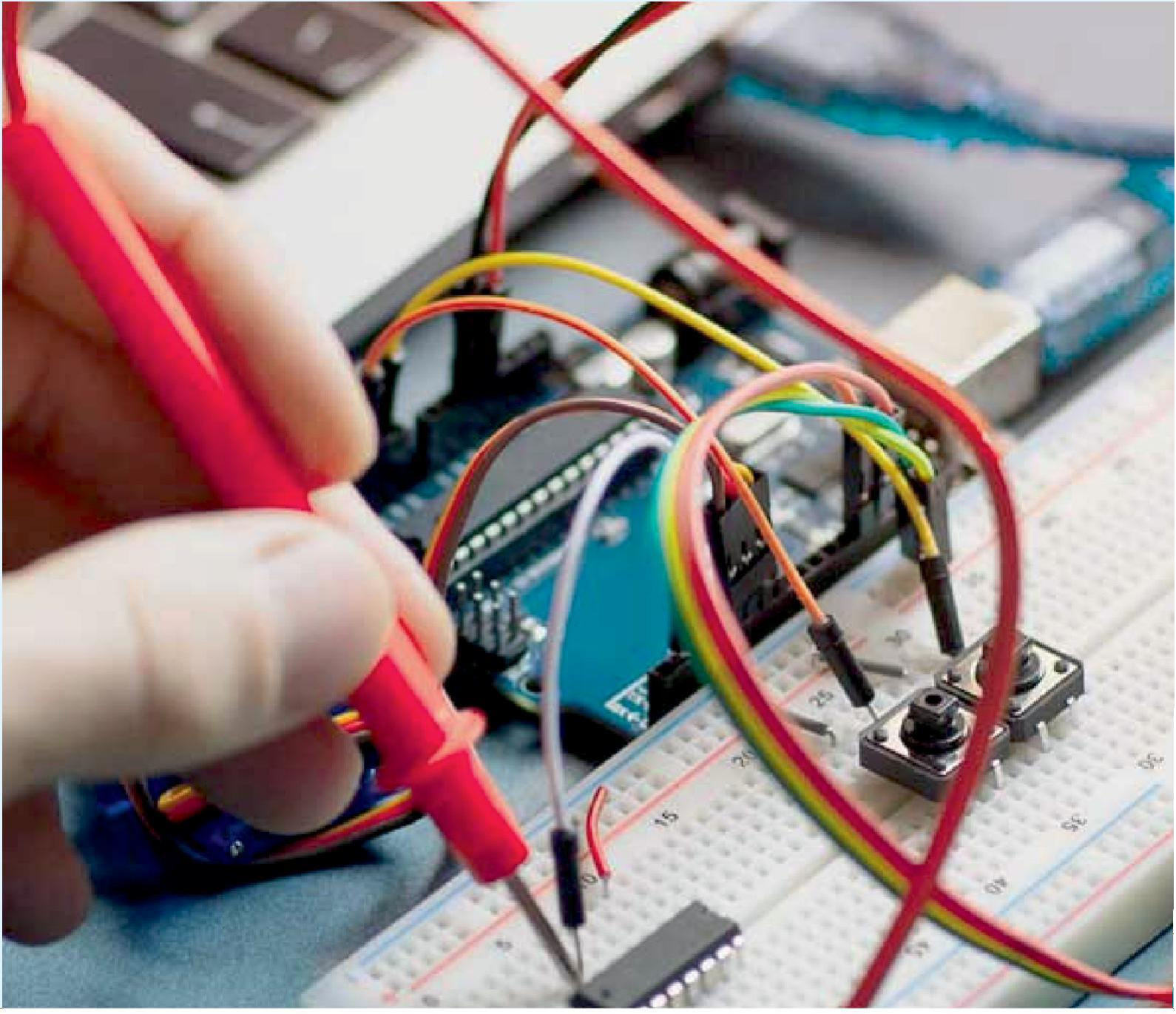

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.317

International Journal of Advanced Research

in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

9940 572 462 6381 907 438 ijareeie@gmail.com

Scan to save the contact details